3. Social Significance of Religion : धर्म का सामाजिक महत्व

" अर्थात धर्म वह अनुशासित जीवन क्रम है, जिसमें लौकिक उन्नित (अविद्या) तथा अध्यात्मिक परमगति (विद्या) दोनों की प्राप्ति होती है।

भारतीय सन्दर्भ में यदि धर्म के अर्थ को गहनता से समझने का प्रयास करें तो, इसका मायने है कि जो धारण करने योग्य है, वही धर्म है।

धर्म मनुष्य में जीवन के महत्व को स्पष्ट करता है, पवित्र भावनाओं को पैदा करता है, एवं मानसिक तनाव व चिन्ताओं से दूर रखकर गलत, समाज विरोधी और धर्म विरोधी कार्यों प्रति घृणा को पैदा करता है। इस तरह धर्म व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकाश करता है एवं उसे सुख समृद्धि हेतु धार्मिक नियमों के अनुरूप आचरण करने के लिए प्रेरित करता है।

सामाजिक जीवन के संगठन में इसका महत्व बहुत अधिक है। यह जीवन के संकट की स्थित के करीब आने और लोगो को सम्बोधित करने में मदद करता है, विद्वानों ने तर्क दिया है कि धर्म मानव जीवन को इस हद तक अर्थ देता है कि इसे जीवन की कठिनाइयों में फंसे लोगों को राहत देने के रूप में चित्रित किया गया है।

"सामाज में व्यक्ति जीवन के प्रति जो धारणा विकसीत करता है, या धारणा करता है वही धर्म है।"

• भारतीय संस्कृति और धर्म : हमारी भारतीय संस्कृति दुनिया की सबसे पुरानी और सबसे जटील संस्कृतियों में से एक है। भारत कई धर्मो की महत्वपूर्ण आबादी वाली भूमि है। भारत में नास्तिकों और अज्ञेयवादियो की भी बड़ी आबादी है। भारतीय संविधान धर्म की स्वतन्त्रता की गारंटी देता है।

भारतीय संस्कृति और धर्म के बीच का सम्बन्ध अत्यन्त जटिल है। धर्म भारतीय संस्कृति का अत्यन्त महत्वपूर्ण हिस्सा है, अधिकांश लोग किसी ना किसी रूप में धर्म का पालन करता है। इन सबके बावजूद भारतीय संस्कृति भी धर्मनिर्पेक्ष है, यहाँ बहुत से लोग किसी भी धर्म का पालन नहीं करते हैं।

भारतीय संस्कृति धर्म से अत्यधिक प्रभावित है। भारतीय संस्कृति के कई पहलू हैं, जैसे : जाति व्यवस्था की उत्पत्ति धर्म से हुई है। भारतीय राजनीति और समाज में धर्म भी एक भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिए ; हिन्दु आबादी का बहुमत है, और हिन्दु धर्म का भारतीय संस्कृति पर महत्वपूर्ण प्रभाव है। इस बीच मुसलमान एक बड़ा अल्पसंख्यक वर्ग है और इस प्रकार इस्लाम का भारतीय संस्कृति पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव है। हमारे भारतीय धर्म एवं दर्शन में अध्यात्मिकता का भी परस्पर सम्बन्ध है। क्योंकि हमारी भारतीय धर्म (संस्कृति + अध्यात्मिकता) दोनो को मिश्रित करता है। ऐसा इसलिए कहा गया है, क्योंकि जो 10 सार्वभौमिक तत्व बताए गये है, उनमें से बहुत सारे अध्यात्म